An International Indexed, Refereed, Interdisciplinary, Multilingual, Monthly Research Journal

ISSN 0974-2832

Vol.VI Issue- 68,69, Sept-Oct-2014 (Combined)

Impact Factor- 1.0060 (UIF)

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

शोध समीक्षा और मूल्यांकन

Hindi, English, Maths, Physics, Chemistry, Biology, Information Technology, Engineering, Management, Commerce, Life Sciences, Home Science Economics, Political Science, Public Administration, Education, Music, Law, Human Science, History, Computer, Psychology

AN INTERNATIONAL REFERRED RESEARCH JOURNAL

S.S.M.

WAY TO SUCCESS.....

R.A.E.

JAIPUR INDIA

Editor

Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ssmrae.com

behavior among 1-3

4-5

acebook 8-9

10-11

nce of loss 15-16

to Humanism 28-30

17-19

ा–शिक्षण पद्धति 48-50

ीनिवास यांचे योगदान 70-73

37-40

46-47

20-22

74-75

History

राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन में धौलपुर रियासत का योगदान 43-45
* नीलू शर्मा

बस्तर मधील आदिवासींचा मुरिया उठाव 1876 एक अध्ययन 63-66
* डॉ. एस. आय. कोरेटी ** प्रा. नरेश एम. मडावी

प्राचीन भारतीय स्त्रीजीवन 67-69
* प्रा. डॉ. अनिल माणिकराव बैसाणे

सामाजिक शास्त्रांमधील संशोधनाची संकल्पना 76-78
* प्रा. डॉ. अनिल माणिकराव बैसाणे

Home Science

Stress Due To Dual Role of Women Intrepreneureship and Its Management 6-7
* **Dr.Smt.Babita Dubey ** Miss Vijaylaxmi Singh**

Education

Effectiveness of Constructivist Teaching and Learning in the Subject 12-14
* **Ku. Anjali Deshmukh**

Evaluation for The Awareness of Constructivist Approach of Teaching 23-25
* **Dr. Kohale Avinash Madhukarrao**

A study of spelling mistakes by secondary level students in English writing 26-27
* **Dr. (Smt.) Gulrukh Hameed**

स्त्री–शिक्षा का क्रमिक इतिहास 31-32
* सोनिया रानी

अध्यापक विद्यालयातील प्रशिक्षणार्थ्यांची 79-81
प्रा. डॉ. अरविंद जोशी

Sanskrit

श्रीमद्भगवद्गीता में भक्तियोग 35-36
* डॉ0 रेखा सिंह

Hindi

साझी संस्कृति और विरासत का लोक–जीवी सूफ़ी साहित्य 33-34
* डॉ. चमन लाल शर्मा

हिन्दी उपन्यास और आदिवासी समाज 41-42
* डॉ. अमिय कुमार साहु

शिवानन्द कामड़े : एक व्यंग्यकार 51-53
* डॉ. रमेश टण्डन

खड़ी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन 54-55
* हेमलता पाण्डेय

सूरसागर और जनवादी संस्कृति 56-58
* श्रीमती फेदोरा बरवा ** डॉ.हरिणी रानी आगर

पर्यावरण साहिती 'बहुगुणा' डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह 59-60
* डॉ. करि. सुधा

आवाँ उपन्यास में नारी समस्या 61-62
* डॉ. बांगड रामेश्वर सुरजमल

शोध पत्र – हिन्दी

शिवानन्द कामड़े : एक व्यंग्यकार

* डॉ. रमेश टण्डन

* सहा. प्रा. हिन्दी, महात्मा गांधी शासकीय कलां एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया (छ.ग.)

Sept- Oct. ,2014

सारांश :– आजीविका का साधन पूरी तरह अंग्रेजी होते हुए हिन्दी सेवी शिवानन्द कामड़े ने तकनीकी एवं साहित्य दोनों में हिन्दी माध्यम में जो सेवाएँ दी है वह प्रशंसनीय एवं अतुलनीय है। सिविल इंजीनियरी में हिन्दी में 14 पुस्तकें लिखना, कमजोर एवं पिछड़ी पारिवारिक पृष्ठभूमि रखने वाले छात्रों के लिए निश्चित रूप से एक वरदान साबित हुआ है। व्यंग्य निबंधों के लगभग सभी विशेषताओं – वचन वैदग्ध्य, मुहावरों/लोकोक्तियों, अर्वाचीन/प्राचीन कविता आदि का समावेश आपके व्यंग्य निबंधों में परिलक्षित होता है। विभिन्न विषय क्षेत्रों पर कलम चलाते हुए आपने गुलाम नबी आजाद, महात्मा गांधी, कांशीराम, माधुरी दीक्षित, श्रीदेवी, सुभाष घई आदि पर भी व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया है।

संक्षिप्त परिचय

आपका जन्म 02 जून 1959 या 02 जनवरी 1960 को बिलासपुर में हुआ। आपने बी. ई.–सिविल इंजीनियरी,एम. टेक. एवं एम. ए.–हिन्दी की पढ़ाई की है। आपको हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी एवं छत्तीसगढ़ी भाषा का ज्ञान है। 1976 से आप व्यंग्य लेखन में सक्रिय हैं। अब तक देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं जैसे– रंग चकल्लस, कार्टून वाच, अमृत संदेश, सारिका, रविवार, धर्मयुग, हास्यम्, व्यंग्यम्, रंग, अमर किरण, दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, लोकस्वर, देशबंधु, अट्टहास, सवेरा संकेत, व्यंग्य विविधा, विदूषक आदि में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हैं। आपने सिविल इंजीनियरी में हिन्दी माध्यम की 14 पुस्तकें लिखी। पुस्तक 'निर्माण तकनीकी' को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। आई. एस. टी. ई. नई दिल्ली द्वारा तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी उन्नयन एवं सर्वोत्तम कार्य के लिए आपको मध्यप्रदेश का 'बेस्ट पोलीटेक्निक टीचर्स अवार्ड 2000' से सम्मानित किया गया है। आप मध्यप्रदेश के राज्यपाल द्वारा 'हिन्दी सेवी सम्मान 1998', केन्द्रीय हिन्दी संस्थान हैदराबाद द्वारा 'शब्द सम्राट 1999', जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा 'आचार्य' की मानद उपाधि, छ.ग. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति रायपुर द्वारा प्रथम 'डॉ0 बलदेव प्रसाद मिश्र सम्मान 2002' से विभूषित हैं।

व्यंग्य निबन्धों में वैशिष्ट्य

आपके व्यंग्य निबन्धों में **वैचन– वैदग्ध्य** इस प्रकार है– 'महिलाएँ अपने चरित्र तथा कपड़ों के दाग छुड़ाने में बड़ी माहिर होती हैं।'[1]

प्रतीक उपमानों का प्रयोग भी सहजता से अवलोकनीय है– 'भारतीय संस्कृति में गाय का उतना ही महत्त्व है जितना कि गोबर गैस प्लांट में गोबर का।' एवं 'कृष्ण को गायें उतनी ही पसंद थी जितनी कि गोपिकाएँ।'[2]

प्राचीन कविताओं के माध्यम से आपने लिखा है कि 'कहते भी भारम आती है जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती थी बसेरा, वो भारत देश है मेरा। मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरा– मोती.....उतनी उर्वरक धरती दुनिया में कहीं और नहीं होगी.....। इसे सीधी–साधी, भोली–भाली, जैसा कहो वैसा करती है। बेचारे को बो दो तो बेचारा ही उग आता है। पेड़ को बो दो तो जंगल उग आता है और क्या चाहिए, इतना ब्याज तो बैंक भी नहीं दे सकती। गड्ढा खोदो तो पानी निकल आता है, कुँआ खोदो तो गड्ढा निकल आता है। वोट बो दो तो नेता निकल आता है.....।'[3]

संस्कृत श्लोकों के माध्यम से बुद्धिमान लोगों की प्रवृत्ति पर इन्होंने चोट की– 'वैसे बुद्धिमान किस्म के लोग जो हैं वे अपनी सुबह जुआरियों से, दोपहर स्त्री प्रसंग से तथा रात्रि में चोरों की बात कर बिताया करते हैं–

प्रातः द्यूत प्रसंगेन मध्यान्हे स्त्री प्रसंगत।
रात्रा चोर प्रसंगेन जालो गच्छति धीमताम्।।' [4]

प्राचीन कविता के रूप में, 'परतचन्द्र प्रतिबिम्ब कहूँ जलमथि चमकायो.....।'[5]

'विधवा सहानुभूति' में आपने लिखा है कि 'नायक नायिकाओं के वस्त्र स्खलन के बाद नृत्यांगनाओं का सवाल उठता है तो उनके लिए क्या घर, क्या बाथरूम ? क्या देवाल,य क्या मदिरालय– 'परमारथ के कारण मोहि न आवै लाज'।

प्राचीन व्यंग्य पंक्तियों में **क्षेत्रीय बोली** ने इस प्रकार अभिव्यक्ति पायी– सच है भगवान, इन लेडिजों को खुश करना मनुष्य के बस की बात नहीं। निमाड़ फैमिली का एक पति अपनी बीबी को खुश करने के लिए कह दिया– जो मांगना हो मांग ले, मूड में हूँ देने के। अब पत्नी की बन आयी उसने जो मांगा नीचे के लिस्ट में उसका वर्णन करना अप्रासंगिक न होगा–

'शुक्र को तारो रे ई वर उंगी रह्यो
ते की भखडरी की घड़ाव
ध्रुव की बादलई रे ई वर तुली रहे
तेकी भख डत बोल रंगाव
सरग की बिजलई रे ई वर कड़की रहो
तेकी भख उ भगजी लगाव
नवलख तारा रे ई वर चमको रह्या

तेकी भखअ अंगिया सिलाव
चांद सूरज रे ई वर उगी रह्या
तेको भख उ टेको लगाव
वासुकी नाग रे ई वर देखई रह्यो
तेकी भख उ एणी गुचाव
बड़ी हठ वाकई रे, गौर ल गोर डी।'[6]

मुहावरा / लोकोक्ति का प्रयोग आपके व्यंग्य निबन्धों में सहज ढ़ग से हुआ है–

1. सब लाईन में खड़े हैं.....जहाँ चाह वहाँ राह। पेट्रोल की चाह किसे नहीं।[7]
2. यहाँ तो गवर्नमेंट कह दे कि 'मेरी मुर्गी की एक टांग', तो आपको भी यही कहना पड़ेगा और यही छापना पड़ेगा।[8]
3. भारम के कैमरे ने कला और संस्कृति को खूब उघाड़ा, कौन बोले ? नंगों से खुदा डरे, यदि खुदा भी आजकल के इन फिल्मों को देख ले तो बगैर भारम खाए नहीं रहेगा।[9]
4. .....वहाँ पहले सत श्री अकाल कहते थे, अब सिर्फ अकाल कहते हैं.....। सुबह–सुबह लोग राम–राम कहते थे अब मुँह में राम बगल में छूरी लिए घुमते रहते हैं।[10]
5. और स्वर्ग प्राप्ति के लिए आम का वृक्ष लगाओ और पाओ आम के आम गुठली के दाम।[11]
6. कहते हैं न जब आदमी का घर बिकता है तो सबसे पहले पड़ोसी ही बोली लगाता है।[12]

नेता के स्वभाव पर कटाक्ष– 'इस कैमरे के बगैर नेता जिंदा नहीं रह सकता। इसी पिंजरे में उसकी आत्मा कैद रहती है..... उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व कैमरामय होता है। यदि वे भापथ भी लेंगे तो कैमराना अंदाज में। फीता काटेंगे तो कैमरात्मक ढ़ंग से। मुस्कुरायेंगे तो कैमरास्टिक तरीके से।[13] 'यदि नेता और पेट्रोल को आप एक साथ खुला छोड़ दें तो परिणाम जानते हो क्या होगा। पेट्रोल तो बाद में उड़ेगा..... नेता ही पहले उड़ लेंगे।'[14]

नारियों पर तीखी टिप्पणी आपने इस प्रकार की– 'ठंड आते ही महिलाएँ स्वेटर्रानी लगती हैं। वे स्वेटर्र–स्वेटर्र करने लगती हैं। सुनकर लोगों को पता चल जाता है कि ठंड आ गई है। स्वेटर बनाना महिलाओं के दाएँ / बाएँ हाथ का खेल है। स्वेटर के बिना भारतीय महिलाएँ एकदम अधूरी है। स्वेटर बनाना उनका जन्म सिद्ध अधिकार है। पत्नी अपने पति के गले में फंदा डालने लगती हैं। ठंड के इस सीजन में न जाने कितनों के घर बनते हैं कितनों के उजड़ते हैं। समूचा वातावरण स्वेटर के अंदर कैद हो उठता है। बड़ी उधेड़बुन की स्थिति छा जाती है।

कभी इनके गोले का ऊन उनके गोले में, तो कभी उनके गोले का ऊन इनके गोले में। कभी इनकी बांह उनके गोले में, कभी उनकी बांह इनकी कमर में। जहाँ देखो वहीं उधेड़ बुनाई, मास्टरानियाँ स्कूल के धूपहले प्रांगण में टीन की कुर्सी डाले या बेंच में पैर फैलाये ऊन का पढ़ाने या स्वेटर बनाने बिगाड़ने में लीन रहती हैं। थ्योरी के साथ–साथ प्रैक्टिकल भी। एक पंथ दो काज।'[15]

नये दौर के **मानव** पर आपने व्यंग्यार्थ किया– '**आज्कल** के नये–नये पिता जी लोग कान्वेंट में शिक्षा प्राप्त **करने** वाले अपने बेटों को 'आप' कहते हैं और पत्नी को 'तुम'. .....।'[16] **फिल्मी दूनिया** पर आपने चुटकी ली, 'सायरा बानू की टांगों की सिर्फ दिलीपकुमार ही नहीं बल्कि हमारे ढेरों फिल्मी दर्शक भी बड़ी इज्जत करते हैं। इन प्यारी–प्यारी जायकेदार टांगों को लोग ऐसे देखते हैं जैसा कि कोई भूखा प्यासा, बॉयल किए मुर्गे की टांग को।'[17]

नौकरशाही में कार्यालय की स्थिति पर आपने कटु आलोचना की, 'हमारे देश के क्लर्क अपने रिटायर होने के पहले जितनी ज्यादा फाइलें निपटा सकते हैं, निपटाते हैं। जिन फाइलों को ये नहीं निपटा सकते, उन्हें दीमक और सरकारी चूहे निपटाते चलते हैं।'[18]

धर्म के नाम पर आपके विचार कुछ इस तरह, 'माफ करना गणपति बप्पा!.....इस साल तो आप बैठ लो, ये लोग जहाँ बिठा रहें हैं। पुणचा वर्षा आपको जनता क्वार्टर दिलवा देंगे, फिर वहाँ आप आराम से पैर पसारकर, सूँड फैला के हाथ फैला के बैठियेगा। परमानेण्टली। क्योंकि मैं आपको मंदिर में बिठाकर फिर से पब्लिक का अयोध्या नहीं बनाना चाहता।[19]

जनता की लाचारी एवं ताकत दोनों पर आपने लिखा है, 'किसी तरह से आजाद हुए। देश गुलाम, नवी आजाद हो गया। देशवासी खुशी से झूम उठे..... देश का बटवारा हो गया।. .....हमने अपने देश का 'दे' दूसरों को दे दिया। 'श' शेष रहा। जिसे हमने अपने खुद के 'ख' से लगाकर 'खुश' हो गये।'[20] 'पब्लिक तो अब मुँह पर थूकने को तैयार रहती है। आप उन्हें मौका तो दो। वह बराबर थूकेगी। छोड़ेगी नहीं चाहे आप जो हो। बस उन्हें मौका भर मिलना चाहिए।[21]

लोकतंत्र के चतुर्थ स्तम्भ पर, 'इन संपादकों का दिमाग खराब मत करो यार। जैसा जो कर रहा है, करने दो। काहे को लफड़ा में पड़ना। हाँ, इनका मूड बिगड़ा कि राष्ट्र की बिगड़ी फिर कलम अंखबार एक तरफ, उठायी बंदूक और ठांय। फिर चाहे वो राष्ट्र हो या राष्ट्रपिता। महात्मा गांधी की हत्या करने वाला कौन था ? कोई आतंकवादी ? या पुलिस का आदमी ? या कोई लेखक या प्रकाशक ? नहीं। तब फिर कौन था ? संपादक ? जी हाँ। गांधी जी की हत्या करने वाला एक संपादक ही था। हिन्दू राष्ट्र (पूणे) का संपादक नाथूराम विनायक गोड़से। अब आगे की आप जानो। समझदार को उतना इशारा काफी होता है, जितना कि दाल में नमक।[22]

व्यक्तिगत व्यंग्य निबन्धों की रचना आपके द्वारा निर्भीकतापूर्ण हुई है– 'हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल भी अपने ओमप्रकाश के लिए जोड़–तोड़ शुरू कर दिए। पर बेटा निकला

कुलदीपक की बजाय कुलदीमक। बेचारा दिल्ली हवाई अड्डे पर घड़ियों की तस्करी करते पकड़ा गया।' [23] 'महाराष्ट्र के भूतपूर्व मुख्यमंत्री शिवाजी राव निलंगेकर की ममतामयी बेटी.....चन्द्रकला ढावले के शोधकार्य का घपला। गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमंत्री माधवसिंह सोलंकी का पुत्रीमोह। चौधरी चरणसिंह की पुत्री श्रीमती सरोज वर्मा को अनुशासनहीनता के कारण पार्टी से निकाल दिया जाना, मध्यप्रदेश के उच्च शिक्षा राज्य मंत्री चित्रकांत जायसवाल का मार्कशीट काण्ड। ये सब क्या हो रहा है.....?' 24 आपने हर्शद, कांशीराम, मायावती, फूलनदेवी, मुलायम सिंह, चरण सिंह, मेनका एवं फिल्मी जगत के संजय दत्त, माधुरी दीक्षित, श्री देवी, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, आनंद बक्षी, सुभाष घई आदि को भी व्यंग्य के निशाने पर लिया।

संदर्भ ग्रंथ

1. कामड़े, शिवानंद :विधवा सहानुभूति, पृ0 184
2. ———" "———46
3. ———" "——एण्ड संस की परम्परा 43
4. ———" "———85
5. ———" "———86
6. ———" "———87–88
7. ———" "———01
8. ———" "———35
9. ———" "———35
10. ———" "———44
11. कामड़े, शिवानंद : एण्ड संस की परम्परा, पृ0 184
12. ———" "———54
13. मजीठिया,सुदर्शन;तिवारी,बालेन्दु शेखर:स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य सृजन की यात्रा, पृ0 363
14. कामड़े, शिवानंद : एण्ड संस की परम्परा, 03
15. कामड़े, शिवानंद : हे! ल्मेट 79.
16. कामड़े, शिवानंद : एण्ड संस की परम्परा,02
17. ———" "———23
18. कामड़े, शिवानंद : विधवा सहानुभूति 109
19. कामड़े, शिवानंद : हे! ल्मेट 33
20. कामड़े, शिवानंद : एण्ड संस की परम्परा, 56
21. ———" "———09–10
22. ———" "———32–33
23. ———" "———61–62
24. ———" "———62